ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 14, Issue 1, Jan 2024 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में चित्रित स्त्री पुरुष संबंध

प्रतिभा कनोजिया
शोधार्थी
हिंदी विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय,
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

सार-

स्त्री और पुरूष जीवन रूपी रथ के दो पहिए है। दोनों के संयोग से सृष्टि का सृजन होता है। किसी एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व नहीं है। उसके बाद भी पुरूष ने स्त्री को अपने बराबर नहीं समझा और अधिकारों से वंचित रखा। यही पक्षपात दृष्टि ने शिक्षित नारियों को आंदोलन करने को मजबूर किया जो आज ज्वलंत मुद्दा 'स्त्री विमर्श' के रूप में दृष्टिगोचर है। सुधा जी के कथा साहित्य में स्त्री पुरुष संबंधों का यथार्थ उजागर हुआ है। पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में स्त्री की वास्तविक स्थितियों, मनोस्थितियों और विसंगतियों आदि का यथार्थ परख चित्रण किया गया है। संयुक्त एवं एकल परिवारों में स्त्री संघर्षमय जीवन को उद्घाटित किया है। सुधा जी की कहानियों में दांपत्य संबंधों में संत्रास, घुटन, टूटन एवं अलगाव बोध के साथ-साथ विवाहेत्तर संबंध और लिंगभेद की विसंगतियों को दर्शाया गया है।

बीज शब्द- साहित्य, स्त्री, पुरुष, संबंध, कहानी, परिवार, आर्थिक, आत्मनिर्भर

आमुख-

स्त्री और पुरुष दोनों सृष्टि के संचालक हैं। किसी एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व नहीं है। उसके बाद भी पुरुष समाज ने स्त्री को अपने अधिकारों से वंचित रखा है। सुधा अरोड़ा सातवें दशक की प्रसिद्ध नारीवादी लेखिका है। इनके चौदह कहानी संकलन, एक उपन्यास, दो काव्य संकलन और स्त्री विमर्श पर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। इन्होंने साहित्य के केंद्र में स्त्री जीवन को रखकर उससे जुड़ी विभिन्न समस्याओं का यथार्थ समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। सुधा जी ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से स्त्री पुरुष संबंधों पर विस्तृत चर्चा की है। जिनको निम्न बिंदुओं के द्वारा समझा जा सकता है-

समसामयिक संदर्भ : स्त्री पुरुष संबंध - उत्तरोत्तर विकास और जीवन के हर क्षेत्र में हो रहे आमूल चूल बदलाव के कारण अब महिलाओं की नौकरी में संख्या बढ़ने लगी है। नर्सिंग और अध्यापन की सीमित क्षेत्र से आगे बढ़कर महिलाएं आज सभी क्षेत्रों में पुरुषों से बराबरी कर रही है। राजनीति, प्रशासनिक, विदेश, न्यायिक तथा सेना में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ गई है। आर्थिक क्षेत्र में बराबरी पर आने के बाद स्त्री-पुरुष के परंपरागत संबंधों में भी तेजी से बदलाव आया है। परिवार के दायरे तक सीमित रहने वाली स्त्री अब स्वतंत्रता और समानता के साथ सम्मान पूर्वक जीवन निर्वाह कर रही है। समानता और स्वतंत्रता के वातावरण में कुछ मामलों में तनाव और कटुता भी देखने को मिलती है। नौकरी में एक दूसरे के प्रति स्पर्धा, ईर्ष्या, पति-पत्नी के संबंधों में शक, अन्य के साथ संबंध, विफल प्रेम विवाह, लिव इन रिलेशनशिप आदि मामले सामने आ रहे हैं। एक विवाह संबंध छोड़कर दूसरी तीसरी शादियां भी कर रहे हैं। पति-पत्नी के बीच बढ़ते तनाव से अलगाव तथा तलाक की घटनाएं भी बढ़ने लगी है। इसी स्थिति में संपत्ति आदि गुजारा भत्ता बच्चों की परवरिश के लिए न्यायालय में मुकदमों का अंबार लगा रहता है। दांपत्य जीवन में तनाव और रिश्तो का टूटना यह एक बड़ी समस्या आज समाज में व्याप्त है। पुरुषों में ही नहीं अब कुछ स्त्रियां भी विवाहेतर संबंध रखने के मामले में बहुत आगे बढ़ रही है। इस प्रकार की स्थिति में बच्चों पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। पढ़े-लिखे और आर्थिक रूप से संपन्न युवक-युवतियों अन्तर्जातीय विवाह भी कर रहे हैं। स्वतंत्रता और समानता के माहौल में कुछ यूवतियां प्रेम के नाम पर कपट आचरण कर अपने प्रेम जाल में फंसा रही है। कहानी 'राग देह मल्हार' तथा 'कत्लगाह यानी माटी कहे कुम्हार से' इस प्रकार की स्वच्छंद आचरण करने वाली लड़कियों की सच्चाई को सामने ला रही है। "भुवनमोहिनी ऐसी जमात की सिरमौर थी, जो हरेक को सीढ़ी बनाकर मंजिल की ओर आगे बढ़ती चली जा रही थी और जिस सीढ़ी का काम समाप्त हो जाता, उसे पाँव के अंगूठे से परे धकेल देती।"1

संयुक्त परिवार: स्त्री पुरुष संबंध - सुधा जी की अधिकांश कहानियों में संयुक्त परिवार का कथानक नहीं है। उनकी 'तानाशाही', 'मोहल्ले की लड़की जब बड़ी होती है', 'कांसे का गिलास', 'भागमती पंडाइन का उपवास', 'देह धरे का दंड' आदि संयुक्त परिवार के कथानक पर आधारित है। इसी प्रकार उपन्यास 'यही कहीं था घर' के भाग 'मोहल्ले की लडक़ी जब बड़ी होती है' में भी संयुक्त परिवार का कथानक है। जिसमें कलकत्ता के तीन मंजिला गुप्ता परिवार का वर्णन इस प्रकार हुआ है "ऊपर के

दोनों तल्लों पर उनका अपना परिवार रहता है। ईश्वर कृपा से बहुत भरा-पूरा परिवार है उनका- बड़े भाई के पाँच बच्चे, उनके अपने चार और छोटे भाई का एक। अब उनके फलते-फूलते परिवार को दो तल्ले भी कम पड़ते है।"2 संयुक्त परिवार में स्त्री पुरुष अर्थात पति-पत्नी संबंध में ज्यादा तनाव नहीं आता है। क्योंकि निर्णय लेने का अधिकार परिवार के मुखिया का दायित्व स्त्री की सास या ससुर के पास होता है। अतः बहुत सारी शिकायती उनको लेकर ही होती है।पति भी बचने के लिए रास्ता निकाल लेता है कि निर्णय लेने का अधिकार उसे नहीं है या यह फैसला मेरा नहीं है। दूसरा संयुक्त परिवार में पति-पत्नी को इतना सुरक्षित एकांत नहीं मिल पाता है कि आपस में झगड़ा कर सके या लंबे समय तक संवादहीनता बनाए रखें। संयुक्त परिवारों में पति-पत्नी के बीच आमतौर पर कटुता या तनाव इसी कारण से होता है की पत्नी संयुक्त परिवार से अलग घर बसाने हेतु पति को आग्रह करती है। आमतौर पर समझदार पति समझा बूझाकर कुछ समय निकाल भी लेते हैं। आजकल संयुक्त परिवार में कुछ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं इस प्रकार से भी हो रही है की शादी के तुरंत बाद दहेज व अन्य कारणों से रिश्ता जल्दी टूट जाता है। महिलाओं को घरेलू हिंसा के प्रति संरक्षण प्रदान करने वाले कानून के आने के बाद इस प्रकार की प्रवृत्ति भी बड़ी है कि विवाह के दो चार माह बाद ही लड़की घरेलू हिंसा तथा दहेज प्रताड़ना का केस दायर करती है। ऐसे में रिश्ता तो रहता ही नहीं है परंतु कानूनी झमेले में फंसकर दोनों परिवार कोर्ट कचहरी के चक्कर लगाते रहते हैं।

एकल परिवार : स्त्री पुरुष संबंध - अधिकांश कहानी शहरी परिवेश के कथानक पर आधारित है। इन कहानियों के पात्र बड़ी शहरों महानगरों में रहने वाले हैं। प्रायः सभी कहानियों में पति-पत्नी दोनों नौकरी करते हैं या अपना व्यवसाय चलाते हैं। भागदौड़ भरे जीवन की व्यस्तता के कारण यह अपने बच्चों को उचित समय नहीं दे पाते हैं। सामाजिक संपर्क भी बहुत कम हो पाता है। वस्तुत: इनको आवश्यक होने पर भी लड़ने झगड़ने का पर्याप्त समय भी नहीं मिल पाता। पति-पत्नी के संबंध मधुर के बजाए समझदारी पर ही चलते रहते हैं। एक दूसरे की प्रति शक एवं अविश्वास यहां बना रहता है। परंतु उसके आधार पर अपने जीवन को पटरी से उतारने की गलती बहुत कम दंपति करते हैं। एकल परिवारों में 'वर्चस्व' कहानी की सविता जैसी कमजोर तथा अंदर ही अंदर अपने पति के व्यवहार से दुखी रहने वाली महिलाएं भी आती है। जिनको लगता है कि उससे ज्यादा एक कुत्तिया को महत्व दिया जा रहा है फिर भी ऐसी स्त्रियां सब कुछ सहन करती हुई अपना जीवन निभा कर दी रहती है। 'ताराबाई चाल

नंबर एक सौ पैंतीस' कहानी की स्त्री पात्र अत्यधिक मानसिक दासता की चरम स्थिति में है। जहां उसे अपने पति के अत्याचारों से भी प्रेम है। इस प्रकार की मानसिक रूप से गुलाम स्त्रियां अपने पति की अत्याचारों को जीवन भर सहन करती रहती है और पति की मृत्यु पश्चात भी उसके अच्छे व्यवहार की बजाय अत्याचारी व्यवहार को दिल से याद करती है। 'सत्ता संवाद' कहानी के पति-पत्नी के संबंधों के संवादहीनता की वास्तविक स्थिति को हम प्रयुक्त संवाद के माध्यम से समझ सकते है "घर में हम तीन प्राणी और चार कोने- सब एक-दूसरे से कटे हुए और अलग-थलग।"3 इसी प्रकार 'यह रास्ता उसी अस्पताल को जाता है', 'रहोगी तुम वही' कहानियों में भी एक परिवारों की स्थितियों का चित्रण हुआ है। आत्मनिर्भर स्त्री : स्त्री पुरुष संबंध - आर्थिक रूप से महिलाओं के आत्मनिर्भर होने से स्त्री पुरुष संबंध में भी भारी बदलाव आया है। स्त्री अब आर्थिक रूप से स्वावलंबी होने के कारण अपनी सहज इच्छा आकांक्षा के अनुरूप व्यय भी कर सकती है। अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान दे रही है। आत्मनिर्भर महिलाएं अपने निर्णय लेने में स्वतंत्र हो गई है। पति या परिवार के अन्य सदस्य का दबाव उनके निर्णय पर नहीं रहता है। अब से भावुकता के बजाय तार्किक आधार पर फैसले ले रही है। इसका एक समानांतर पक्ष है दहेज प्रथा का विरोध। बदलाव के यह संकेत आशान्वित करते हैं कि आजकल कई आधुनिक जोड़ों में लड़कियां भी अपने पति से अधिक कमाने लगी है और वह शुरू से ही अपने आर्थिक स्थिति के प्रति चौकस रहती है। 'पीले पत्ते' कहानी की उपेक्षिता मंदाकिनी की बेटी अन्वेशा अपने जीवन की फैसले स्वयं लेती है। 'कांसे का गिलास' कहानी में भी स्त्री आत्मनिर्भरता के स्वर मुखरित हुए हैं। 'रहोगी तुम वही' कहानी में शादी के पंद्रह साल के बाद वाली स्त्री आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते हुए भी पति की उपेक्षा और उपालंभों की शिकार है। "यह क्या है, मेरे जूते रिपेयर नहीं करवाए तुमने? और बिजली का बिल भी नहीं भरा?....स्कूल में पढ़ाती हो, वह क्या काफी नहीं?"4

दांपत्य जीवन में संत्रास, घुटन, टूटन व अलगाव बोध -बदलते हुए समय में पति-पत्नी के रिश्तों में विश्वास, समर्पण और निष्ठा भाव में भी बदलाव आया है। एक दूसरे के लिए अपना जीवन न्योछावर करने वाले पति-पत्नी के बजाय आज दुनियादारी को समझने वाले व्यावहारिक समझौतावादी दंपति नजर आ रहे हैं। लंबे समय तक इस प्रकार के दांपत्य संबंध में रहने के बाद घुटन का अनुभव करने लगते हैं उनका स्वयं यह लगने लगता है कि वह रिश्ते को धो रहे हैं। अतः अपने रिश्ते को व्यर्थ

समझने के कारण उनमें घुटन ज्यादा बढ़ जाती है एवं सामाजिकता की कमी के कारण रिश्तो में टूटन और अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अति आधुनिक जीवन शैली में महानगरों में रहने वाले कुछ लोग समाज के नैतिक मूल्यों को भूलकर पूरी तरह से स्वेच्छाचारी हो गए हैं। इनमें कुछ भी महिलाएं भी शामिल है। सुधा जी की लगभग सभी कहानियां में स्त्री अपमान, उपेक्षा, यातना की विभिन्न चित्र प्रस्तुत करते हुए दांपत्य जीवन में घुटन और संत्रास भोग रही महिलाओं के दर्द को उजागर किया है। 'भागमती पांडइन का उपवास' दांपत्य का संत्रास भोग रही एक विवश शोषण नारी का जीवंत उदाहरण है। रचनाकार ने बड़ी गहराई से स्त्री की सहनशीलता और पति के अत्याचारों का वर्णन किया है। दीर्घकाल तक पति की उपेक्षा तथा अन्याय पूर्ण व्यवहार सहन करते हुए भागमती का धैर्य भी जवाब दे जाता है। 'अन्नपूर्णा मण्डल की आखिरी चिट्ठी' कहानी की पात्र अन्नपूर्णा के शब्दों में "हर शरीर के थकने की अपनी सीमा होती है। मैं जल्दी थक गई, इसमें दोष मेरा ही है।"5 अन्नपूर्णा जैसी हजारों-लाखों औरतों के जीवन की त्रासदी को लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से एक बहुत बड़ी सच्चाई को मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की है।

विवाहेत्तर जीवन- अपने विवाहित जीवनसाथी से जी भरने पर कुछ समय के लिए या दीर्घकाल के लिए विवाहेत्तर संबंधों को लोग स्वीकार कर रहे हैं। इस विकृति के कारण परिवार बिखेर रहे हैं। अलगाव और तलाक की घटनाएं आम हो गई है। इस सब का प्रतिकूल असर बच्चों पर पड़ता है। कुछ विवाहेत्तर संबंधों के कारण मारपीट और हत्या भी हो रही है। विवाहित जीवन का उचित विश्लेषण करें तो यह सच सामने आता है कि क्षणिक आकर्षण में लोग अपने परिवार को तबाह कर देते हैं। एक बार बिखरने के बाद वह परिवार पूर्व की भांति जुड़ नहीं पाता है। इसके अलावा जीवन में अस्थिरता का भाव रहता है निरंतर अनिश्चित भविष्य की धारणा के कारण तनाव और बेचैनी बनी रहती है। मानसिक अस्वस्थता के कारण ऐसे लोग जीवन भर दुखी रहते हैं और कुछ मामलों में यह मनोरोगी आत्महत्या तक कर लेते हैं। 'भागमती पंडाइन का उपवास' कहानी की सुमेधा और भागमती के पति प्रोफेसर पांडे का रिश्ता विवाहेत्तर कहलाता है। अपनी पत्नी के साथ औपचारिक तौर पर रहते हुए भी पांडे अपनी प्रेमिका सुमेधा के साथ अन्यत्र रहते हैं। इसी प्रकार 'राग देह मल्हार' की भूवनमोहिनी और मनप्रीत भट्ट की संगति विवाहेत्तर संबंध की श्रेणी में आता है।

स्वतंत्र सोच: स्त्री पुरुष संबंध- सुधा अरोड़ा की कुछ कहानियों में दांपत्य जीवन के सामाजिक एवं

मर्यादा पूर्ण अनुशासन के बजाय स्वतंत्र सोच को वर्णित किया गया है। इन कहानियों में विवाह की औपचारिकताओं से दूर रहकर अपने ढंग से जीवन जीने की चाहत दिखाई देती है। 'उधड़ा हुआ स्वेटर' की स्त्री पात्र शिवा की दोनों बेटियां स्वतंत्र रहना चाहती है। दोनों विवाह की उम्र को पार कर चुकी है परंतु विवाह से दूर रहना चाहती है। लेखिका के शब्द युवा पीढ़ी की स्वतंत्र सोच को स्पष्ट रूपेण उजागर करते हैं- "हां, वे कहती हैं- नो मैन इज वर्थ अ वुमैन! (कोई भी मर्द एक औरत के लायक नहीं होता)"6 इन शब्दों में उन युवा लड़कियों का पुरुष वर्ग के प्रति अविश्वास प्रकट हो रहा है। यह लड़कियां अपने भावी पति के चुनाव में किसी भी प्रकार की हरबड़ी में नहीं है परंतु वे योग्य वर्ग इंतजार में है। इसी प्रकार 'कांसे का गिलास' कहानी में भी युवा पीढ़ी के स्वतंत्र सोच को उजागर किया गया है। इस कहानी में चिल्की की मम्मी नेहा अपने कैरियर के लिए विदेश चली जाती है। चिल्की के प्रति ममता भाव भी उसके स्वतंत्रता प्रेम को बांध नहीं पाता है। 'पीले पत्ते' कहानी में भी मंदाकिनी के पति अपनी स्वतंत्र सोच के चलते अपनी पत्नी और बेटी को छोड़कर जर्मनी में प्रेमिका के साथ रहने लगते हैं। उनके इस निर्णय से मंदाकिनी और अन्वेषा का जीवन पीड़ादायक हो गया है। जीवन में मिले कड़वे अनुभव को मंदाकिनी सहज रूप में नहीं ले पाती है और मानसिक संतुलन खो देती है। इस प्रकार अनुचित व्यवहार के कारण दाम्पत्य संबंध कड़वाहट भरे हो जाते हैं। जिसका प्रभाव युवा पीढ़ी पर पड़ रहा है और वह शादी के बंधन में नहीं बंधकर स्वतंत्र रूप से अपना जीवन यापन करना चाहते हैं। ऐसे युवा लोगों में अधिकांश बिना शादी के अपने पुरुष या महिला मित्र के साथ अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

लिंग भेद : स्त्री पुरुष संबंध- स्त्री के साथ होने वाले अन्याय और शोषण का मूल कारण हमारी परंपरागत पितृसत्तात्मक सोच है। जन्म से ही परिवार में लड़के-लड़की में भेदभाव किया जाता है। बेटियों की अपेक्षा लड़कों को ऊंचा दर्जा दिया जाता है। वर्तमान में भी हम ग्रामीण क्षेत्रों में मुख्यतया यह देखा जाता है कि लड़के के जन्म पर पूरे गांव में ढोल आदि बजाकर सूचना दी जाती है। उसके उपरांत मिठाइयां बांटी जाती है। परंतु लड़की के जन्म पर ऐसा कोई रिवाज नहीं है। इस प्रकार पूरा दोष हम पुरुष वर्ग पर नहीं डाल सकते। हमारी सामाजिक संरचना ही ऐसी है जिसमें लड़कों को जन्म से ही ठोक पीट कर पुरुष बनाया जाता है। उनके रहन-सहन, खान- पान यहां तक की रंग और खिलौने भी लड़कियों से पाठ दिए जाते हैं। जिसके परिणाम स्वरुप उसका स्वभाव ही ऐसा हो जाता है।

विरासत में ऐसे संस्कार और ऐसा वर्चस्ववादी दृष्टिकोण लेकर जब पुरुष कार्य क्षेत्र में उतरता है तो कहीं बार उसे अपने मन मुताबिक रुतबा नहीं मिलता। वह शासन और नियंत्रण की स्थिति में स्वयं को देखना चाहता है कार्य क्षेत्र में उसे न पाकर उसकी भरपाई वह घर के कार्यकलाप पर अपने शासन से करता है। लिंग भेद की मानसिकता को आधार बनाकर सिनेमा टीवी और मीडिया ने अपनी व्यवसायिक भूख को मिटाने के लिए नैतिकता की सारी हदें पार कर दी है। पत्रिकाओं पर लड़कियों की अर्धनग्न तस्वीरें प्रकाशित की जाती हैं। सिनेमा और टीवी में भी बोल्ड सीन के नाम पर अश्लीलता को परोसा जा रहा है। सुधा जी ने लिंग भेद की मानसिकता को उजागर करते हुए अपनी कहानियों में यह प्रतिपादित किया है की पितृसत्तात्मक व्यवस्था में लड़के-लड़की में भेदभाव किया जाता है। कुछ लोग तो बेटे की चाह में बेटी को जन्म देने वाली मां को मार डालते हैं लेखिका की कहानी 'तीसरी बेटी के नाम ये ठंडे, सूखे, बेजान शब्द' में इस पीड़ा को प्रभावी ढंग से व्यक्त किया है। परिवार में तीसरी बेटी के जन्म के समय इस प्रकार का नकारात्मक माहौल होता है जैसे किसी के अंतिम यात्रा में आए हो। "बुआ ने तुझ पर से चादर हटाई और मुँह सिकोड़ लिया,.....जांघों के बीच, हल्की सी चपत लगाकर.....सिरजनहार को कोसा था, 'हाय मेरे रब्बा! इक्क होर कुड़ी? बनाण वाले दे घर मिट्टी थुड़ गई सी?"7 माँ ने जब अपनी बेटी की अस्मिता की रक्षा करते हुए कहा की मेरे लिए बेटा और बेटी एक समान है। यदि बेटा भी होता तो इतना ही खून और तकलीफ देकर पैदा होता। बुआ पितृसतात्मक समाज की संचालिका के रूप में कहती है "बेटी तो बेटी ही रहती है,...इसे बेटा बनाने की जुर्रत न करना"8 कहानी में लिंगभेद और स्त्री अस्मिता का यथार्थ चित्रण बड़े मार्मिक शब्दों के माध्यम से किया गया है। 'अन्नपूर्णा मंडल की आखिरी चिट्ठी' नामक कहानी में भी बेटी के जन्म के प्रति लोगों की नकारात्मक विकृत मानसिकता पर गहरी संवेदनशीलता के साथ प्रकाश डाला है।

निष्कर्ष-

समग्रतः सुधा जी के कथा साहित्य में स्त्री–पुरुष संबंधों का यथार्थ रूप चित्रित हुआ है। पितृसतात्मक समाज व्यवस्था में स्त्री की समस्याओं को उजागर किया है। घर, परिवार और समाज में स्त्री के प्रति पुरुषों की मानसिकता को उद्घाटित किया गया है। लिंगभेद के प्रति नकारात्मक सोच को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। अतः सुधा जी के कथा साहित्य में स्त्री की मनोव्यथा की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई

है।

सन्दर्भ सूची -

1. बुत जब बोलते है, सुधा अरोड़ा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2015, पृ. 158,159
2. यही कहीं था घर, सुधा अरोड़ा, सामयिक बुक, नई दिल्ली, 2010, पृ. 15
3. काला शुक्रवार, सुधा अरोड़ा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृ. 109
4. दस प्रतिनिधि कहानियाँ, सुधा अरोड़ा, किताबघर प्रकाशन दिल्ली, 2012, पृ. 74
5. अन्नपूर्णा मण्डल की आखिरी चिट्ठी, सुधा अरोड़ा, साहित्य भंडार, इलाहाबाद, 2014, पृ. 157
6. बुत जब बोलते है, सुधा अरोड़ा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2015, पृ. 25
7. काला शुक्रवार, सुधा अरोड़ा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृ. 128
8. काला शुक्रवार, सुधा अरोड़ा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृ. 128